ISSN 2349-638x
Impact Factor 6.293

# AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL
Email id : aiirjpramod@gmail.com
www.aiirjournal.com

## SPECIAL ISSUE No. 64

Executive Editor
Dr. S.M. Maner
Principal
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor
Prof. V. H. Chavan
Head, Dept. of Hindi
Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor
Prof. Pramod Tandale

Scanned by CamScanner

| Sr No | Author Name | Title of Article / Research Paper | Page No |
|---|---|---|---|
| 65. | प्रा. श्री डी.एस. चितमपल्ले | अनुवाद में रोजगार की संभावनाएँ | 182 |
| 66. | डॉ. अमर फकिरसाब सय्यद | अनुवाद और रोजगारोन्मुखता | 184 |
| 67. | डा.जाधव सुभ्राव नामदेव<br>किशोर श्रीमंत ओहोळ | अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार निर्मिती | 187 |
| 68. | डॉ. अनघा तोडकरी | अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार | 189 |
| 69. | नदाफ अजरोद्दीन | हिंदी साहित्य में अनुवाद का महत्व | 191 |
| 70. | डॉ. कृष्णात आनंदराव पाटील | रोजगारोन्मुख हिंदी के विविध पक्ष | 194 |
| 71. | प्रा.डॉ. शिवसर्जन होनाजी ढाले | नव इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में रोजगार उपलब्धियां | 199 |
| 72. | प्रा. डॉ. विश्वनाथ किशनराव भुलेराव | भाषा अध्यायन से रोजगार के अवसर | 201 |
| 73. | डॉ. दत्ता शिवराम सोकेळे | हिन्दी में रोजगार की उपलब्धता | 203 |
| 74. | सुफी शहेमिना सबा<br>डॉ. रविन्द्रनाथ माधव पाटील | भाषा अध्ययन के रोजगारोन्मुख आयाम विज्ञापन क्षेत्र के संबध में | 206 |
| 75. | प्रा. डॉ. मनीषा बाळासाहेब जाधव | हिंदी रोजगारोन्मुख भाषा | 210 |
| 76. | प्रा. सुधाकर कल्लाप्पा इंडी | हिंदी भाषा में रोजगार : राजभाषा अधिकारी (Language Officer) | 213 |
| 77. | प्रा. सोमनाथ वांजरवाडे | हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ | 216 |
| 78. | प्रा. शहिदा अत्तार | भाषा अध्ययन के रोजगारोन्मुख आयाम (हिंदी निबंध के संदर्भ में) | 219 |
| 79. | प्रा. बालाजी सूर्यवंशी | हिंदी में रोजगार : जनसंचार माध्यमों के संदर्भ में | 222 |
| 80. | डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे | संवाद लेखन का स्वरूप | 225 |
| 81. | प्रा. डॉ. मा. ना. गायकवाड | रेडिओ : फीचर लेखन | 227 |
| 82. | डॉ. सुभ्राव नामदेव जाधव | टी.वी. समाचार का बदलता स्वरूप | 229 |
| 83. | डॉ.पंडित बन्ने | सूचना प्रौद्योगिकी और इंटरनेट | 231 |
| 84. | प्रा.डॉ.एम.ए.येल्लूरे | इलेक्ट्रॉनिक मीडिया क्षेत्र और साहित्य | 233 |
| 85. | प्रा. डॉ. एम. के. राऊत | फीचर लेखन | 235 |
| 86. | प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा<br>रईसा यासीनबेग मिर्झा | संवाद लेखन | 237 |




Scanned by CamScanner

# हिन्दी में रोजगार की उपलब्धता

डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे
प्रपाठक. हिन्दी विभाग
शि.म. ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय कळंब

सूचना एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में तो हिन्दी बडी तेजी के साथ प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है इसके साथ ही हिंदी बडी तेजी के साथ बाजार की भाषा बनती जा रही है। आज यह विश्वभाषा की ओर अग्रसर होती जा रही हैं इसी कारण भारत और भारत से बाहर भी हिंदी में रोजगार के अनेक क्षेत्र खुल गए है।

हिंदी में ऐसे अनेक संवैधानिक प्रावधान किए गए कि स्वतंत्र भारत का शासकीय कामकाज हिंदी में ही संपन्न हो इसी कारण हिंदी का नया रुप कार्यालयीन हिंदी बना। कार्यालयी हिंदी का प्रयोग शासन-प्रशासन के दैनिक कामकाज में होना है। कार्यालयी हिंदी का तकनीकी पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकता होती है इसलिए भारत सरकार ने केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा वैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की। इनके महान् प्रयासों के कारण हिंदी की अभिव्यंजना क्षमता में वृध्दी हुई कुछ मिलाकर कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा का प्रयोग बडे पैमाने में होने के कारण रोजगार के क्षेत्र अनेक खुल गए है।

इक्कीसवीं सदी तक आते-आते पत्रकारिता का विकास एवं विस्तार इतना हुआ है कि इसमें रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट, फिल्म आदि सभी दृश्य-श्रव्य माध्यम के साधन अंतर्भूत हो गए हैं, जिससें प्रिंट मीडिया मुद्रण माध्यम के साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दृश्य-श्रव्य का प्रचलन बढ गया है। जन कल्याण, सरकार की नीतियों तथा कार्यों की समीक्षा और जन सामान्य की व्यथा-कथा को सच्चाई से प्रस्तुत करने के अपने उत्तरदायित्व को ही नहीं निभाती है, बल्कि इसके साथ व्यावसायिक दृष्टिकोण को भी उभारती है। इसमें व्यावसायिक और रोजगार मूलक असीम संभावनाएँ दिखायी देती है। यथावश्यक संसाधनों की उपलब्धता के कारण वह भिन्न-भिन्न रुपों में विकसित होती जा रही है और पत्रकारिता के विकसित रुप रोजगारोन्मुख बनते जा रहे है।

जन संचार माध्यमों एवं अनुवाद विज्ञान के क्षेत्र में उपाधि प्राप्त करने के बाद अनुवाद, पत्रकार, हिन्दी अधिकारी, सम्पादक, तत्काल, भाषान्तरकार, संवाददता उद्घोषक, विज्ञापन लेखक, स्क्रिप्ट अनुवादक, फीचर अनुवाद के रुप में तथा दूतावासों, पर्यटन विभाग तथा अन्य मंत्रालयों आदि में कार्य व रोजगार मिलने की संभावना है। अनुवाद आज तक क्रान्तिकारी साहित्यिक विधा के रुप में हमारे सामने है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जिसमें अनुवाद की आवश्यकता महसूस नहीं की जा रही है। आज का विद्यार्थी साहित्य के ज्ञान के अतिरिक्त अनुवाद अथवा पत्रकारिता विषय में किसी पाठ्यक्रम को करने के बाद रोजगार प्राप्त कर सकता है। आज विश्वविद्यालयों ने भी हिन्दी के पाठ्यक्रमों में अनुवाद, पत्रकारिता, सृजनात्मक लेखन, मीडिया आदि रोजगारपरक विषयों को अधिक से अधिक स्थान देना शुरु कर दिया है।

आजकाल हिन्दी का एक नया स्वरुप उभरकर सामने आ रहा है, जिसे प्रयोजनमूलक हिन्दी के नाम से जाना जा रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हिन्दी ने भी आखिरकार करवट बदलनी शुरु कर दी है।

भूमण्डलीकरण, बाजारीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति ने आज के दौर में अनुवाद की आवश्यकता अत्याधिक बढ गई है। इसके प्रभावों कुप्रभावों की ओर ध्यान दिए बिना इस दौर की अंधी दौड में विश्व के देश कदम से कदम मिलाकर आगे बढ रहे हैं, बलिक यह चाहिए कि कोई भी देष इससे बच नहीं सकता। ऐसे में जहाँ अनुवाद की आवश्यकता बढी है, वहीं व्यावसायिक दृष्टि का भी विकास हुआ है। अनुवाद को सामाजिक दायित्व बोध के द्योत स्वान्तः सुखाय शब्द से अनुप्राणित होकर अनुवाद कर्म करने पर धनार्जन करने संबंधी पक्ष हावी होती जा रहा है। अनुवाद रोजगारोन्मुख विद्या तो है ही सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर प्रतिष्ठित करने का शस्त्र भी है'

आज के समय में आयुर्विज्ञान संबंधि से परिचित होना, विविध न्याय, प्रशासन, प्रजातंत्र संबंधी ज्ञान के संवर्धन के विभिन्न कार्यों से अवगत होना, राजनीति, कूटनीति, धर्म, संस्कृति दर्शन से परिचित होना, तुलनात्मक साहित्य और सामान्य तथा इसी प्रकार हिन्दी के समाचारों का किसी अन्य भाषा में अनूदित करके बोलना भी रोजगार का एक अच्छा विकल्प है'



Scanned by CamScanner

आज की पीढ़ी के उज्वल भविष्य की चिन्ता उन्हें भी कुछ-कुछ सताने लगी है। शायद इसी कारण विभिन्न विश्वविद्यालयों ने हिन्दी को अधिक से अधिक स्थान देना शुरु कर दिया है। आज हिन्दी का जो नया स्वरुप सामने आ रहा है, व्यावहारिक हिन्दी, प्रयोजनमूलक हिन्दी, कामकाजी हिन्दी आदि इस क्षेत्र में अनेक विद्वानों ने अपना योगदान दिया है। व्यावसायिक हिन्दी के क्षेत्र में अपनी पहचान बना चुके प्रतिष्ठित एवं सशक्त हस्ताक्षर डॉ. पूरनचंद टण्डन हिन्दी के इस स्वरुप को आजीविका साधन हिन्दी की संज्ञा से अलंकृत किया है। सुप्रसिध्द मीडिया एवं अनुवाद विशेषज्ञ डॉ.सुरेश सिंहल ने भी हिन्दी के इस स्वरुप का जोरदार ढंग से समर्थन किया है और इसे व्यावसायिक हिन्दी का नाम दिया है, किन्तु आज इसके लिए प्रयोजनमूलक हिन्दी प्रचलित हो गया है। इससे अभिप्राय उस भाषा से है जो व्यक्ति को रोजगार दिलाने में सहायक हो।

हिन्दी को प्रयोजनमूलक स्वरुप प्रदान करना और इसे रोजगार से जोडना आज के युग की सबसे बडी चुनौती है। हिन्दी का यह प्रयोजनपरक स्वरुप एक नई अवधारणा के रुप में उभरकर सामने आ रहा है। भाषा प्रौद्योगिकी के इस युग में भाषाओं के सुदपयोग तथा उनके कार्यान्वयन के विविध आयाम नए-नए संदर्भों में हमारे सामने प्रस्तुत हो रहे हैं। आज भाषा की प्रयोजनीयता के संदर्भ में अनुवाद मीडिया, वाणिज्य, पर्यटन, विज्ञापन, विधि सृजनात्मक लेखक प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्र में अभी तक हम हिन्दी साहित्य का अध्ययन, अभ्यास करते आए हैं, किन्तु वर्तमान युग में इतना ही काफी नहीं है। आज के विद्यार्थी की रुचि साहित्य के रसास्वादन की अपेक्षा हिन्दी के व्यावसायिक हिन्दी को अपनाने में होगा वरना विश्व स्तर पर हिन्दी के पिछड जाने का खतरा उत्पन्न हो सकता है हिन्दी को व्यावसायिक स्वरुप प्रदान करने से ही इस खतरे को टाला जा सकता है। अतः आज इसका महत्व निर्विवाद है।

इस संदर्भ में डॉ. पूरनचन्द टण्डन का विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज आवश्यकता है कि हम संसार की रेस में आगे के लिए राष्ट्रभाषा की क्षमता को उसकी उद्योगमूलक, व्यापारमूलक, प्रशासनमूलक तथा रोजगारमूलक दृष्टि को विकसित करें। केवल सूर-तुलसी या जायसी-कबीर पढकर अब काम नहीं चल सकता। हिन्दी को केवल साहित्य का विषय बनाकर रखने के लिए काम नहीं चलेगा। साहित्य के विषय के साथ हिन्दी को जन-जन से जोडने का आंदोलन चलाना अब बहुत जरुरी है। इसके लिए जुटना होगा, समर्पित भाव से आन्दोलन भूमि में कूदना होगा। मात्र अंग्रेजी के विरोध से या वर्षों लम्बे धरनों और विरोध पत्रों से भीड जुटाकर समाचारों सुर्खियों से काम नहीं चल सकता। अखबारी अभियान की तरह अब दर-दर पहुँचना होगा।

आज की शताब्दी को यदि अनुवाद की शताब्दी की संज्ञा से सुशोभित किया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज का युग वास्तव में विज्ञान के साथ-साथ अनुवादकों का युग भी है। आज अनुवाद विषय के क्षेत्र में जितनी अधिक संभावनाएँ हैं, उतनी शायद ही किसी अन्य क्षेत्र में हों। आज का युवा विद्यार्थी साहित्य के ज्ञान के अतिरिक्त अनुवाद विषय में किसी पाठ्यक्रम की उपाधि लेकर कोई भी अनुवादक वरिष्ठ अनुवादक हिन्दी अधिकारी, निदेषक राजभाषा, हिन्दी कार्यान्वयन प्रशिक्षक, विज्ञापन-अनुवादक, समाचार वाचक, संवाददाता, उद्घोषक, स्क्रीप्ट अनुवादक, धारावाहिक अनुवादक, खेली सामग्री अनुवादक, पर्यटन क्षेत्र-दिग्दर्शक या अनुवादक, कमेण्ट्री, अनुवादक रेडियो तथा दूरदर्शन के लिए अनुवादक, फीचर अनुवादक, नाट्यवादक, कथा साहित्य के क्षेत्र में अनुवादक तथा कोश-विज्ञान के क्षेत्र में भी अपनी महत्वपूर्ण जगह बना सकता है। आज तो वैवाहिक विज्ञापन, खान-पान की विधियाँ, रोजगार के समाचार, हैण्डबिल, पैम्फलेट्स, बैनर, वॉल टाईपिंग सभी में द्विभाषिकता दिखाई देती है। क्षेत्र विशेष की भाषा में व्यापार करना अब कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। अनेक भाषाओं का कार्य-साधक ज्ञान एक साथ होने पर व्यक्ति विशेष की प्रतिष्ठा भी बढती जाती है तथा उसके पदोन्नति के अवसर भी खुलते चले जाते हैं। इस संदर्भ में प्रख्यात् भाशाविद् डॉ. पूरनचंद टण्डन कहते है किसी अन्य नौकरी में रहकर भी हम अनुवाद को धनार्जन का सशक्त माध्यम बना सकते हैं। प्रकाशकों के लिए पुस्तकों के देशी-विदेशी भाषाओं से या देशी-विदेशी भाषाओं में अनुवाद किए जा सकते हैं। पैसा भी मिलता है और नाम भी। पुरस्कार भी मिलते हैं और सम्मान भी। किसी भी क्षेत्र में यदि हम अपनी पूरी दक्षता और निपुणता से उतरते हैं तो वहाँ निराशा कदापि नहीं होती। इस प्रकार सरकारी स्तर पर स्थापित दिल्ली या अन्य राज्यों की साहित्य एवं भाशा कादमियाँ अनुवाद का बहुत सा कार्य करती और करवाती हैं। रोजगार, समाचार पत्र, इण्डिया टूडे या अन्य अनेक पत्र-पत्रिकाएँ जो दो या अधिक भाषाओं में एक साथ प्रकाशित होते हैं, अनुवाद पर ही निर्भर करते हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट भी अनुवाद का खूब काम करता और करवाता है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय तो अपने अधिकांष



Scanned by CamScanner

पाठ्यक्रम अंग्रेजी तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराता है। आप ये भी अनुवाद कार्य के लिए एक पैनल तैयार करतें हैं।

इस प्रकार हिन्दी में अनुवाद और पत्रकारिता में रोजगार की असीम संभावनाएं हैं। बस हमें उस योग्यता को हासिल करना है जो एक अच्छे अनुवादक के रूप में पहचान बना सके। अपने अपने विषय में अच्छे अंक पाने से रोजगार प्राप्त होने में मदद होती है।

**संदर्भ ग्रंथ :**


१. अनुवाद विज्ञान - डॉ. नगेन्द्र
२. प्रयोजन मूलक हिन्दी - डॉ.विनोद गोदरे
३. रोजगार परक हिन्दी - डॉ. ईश्वर पवार
४. रोजगार उपलब्धि हिन्दी का प्रयोग - अशोका राभवाले


Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com